MAHMUL03014/13/1/20[illegible]
Vol. [illegible] Special Issue - [illegible] Jan. [illegible]
Online : 2320-[illegible]
ISSN : 2320-[illegible]

RESEARCH FRONT

An International Multidisciplinary Research Journal

Special Issue - 2

''स्वावलंबी शिक्षा यही हमारा ब्रीद'' - कर्मवीर

रयत शिक्षण संस्था का,

दहिवडी कॉलेज दहिवडी

त.माण.,जि.सातारा

हिंदी विभाग

एवं

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली तथा

सातारा जिला हिंदी अध्यापक मंडल, सातारा

के संयुक्त तत्त्वावधान

में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

* विषय *

''२१ वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में व्यंग्य''

दि. ६ (सोमवार) एवं ७ (मंगलवार) अक्तूबर, २०१४

प्रकाशक

प्राचार्य, डॉ.चंद्रकांत खिलारे

दहिवडी कॉलेज दहिवडी

संपादक

प्रा.डॉ.बाळासाहेब बलवंत

संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी विभागाध्यक्ष,दहिवडी कॉलेज दहिवडी

सह-संपादक

प्रा. सोमनाथ कोळी

सहयोगी प्राध्यापक

* आयोजक *

हिंदी विभाग, दहिवडी कॉलेज दहिवडी

21 वीं सदी की समकालीन हिंदी कविता में व्यंग्य

प्रा. बहिरम देवेंद्र भगवानभाई ,
एम.जे.एस.कॉलेज, श्रीगोंदा
ता.श्रीगोंदा जि.अहमदनगर
भ्रमणध्वनी :– 9545104957
Email:- bahiram241@gmail.com
Academic Year -2014-15

समाज का बदलता चेतन, राजनीति के बदलते तेवर, शिक्षा की उपयोगिता, पूंजीवादी संस्कृति को मिलनेवाला बढ़ावा, भोगवादी मानसिकता की प्रदर्शन प्रवृत्ति अर्थात बाज़ारवादी प्रवृत्ति से उपजे दुष्परिणामों को लेकर २१ वीं सदी का पहला दशक आरंभ हुआ। जिसे उत्तर–आधुनिक दौर भी कहा जाता है। हिंदी की समकालीन कविता का विकास १९६० के दशक के बाद होने लगा। नागार्जुन और निराला के जनवादी चेतना के स्वर को धूमिल ने बुलंद कर दिया था। परिवर्तन शीलता और काल से प्रतिबद्धता होने के कारण २१ वी सदी की हिंदी कविता को समकालीन कविता के रुप में पहचाना जाता है। समकालीन कविता अपने जनवादी स्वर को दृढता से स्थापित कर सकी क्योंकि उसकी व्यंग्यधर्मिता। व्यंग्यात्मकता के कारण समकालीन कविता अपने कथ्य की सार्थकता तक पहुँच सकी है।

व्यंग्य मानवीय दुर्बलताओं के सुधार हेतु कटु शैली में उपहास का कार्य करता है तथा समकालीन कविता बीसवीं सदी तक तीखे व्यंग्य की धार पर आधुनिकतावादी दुष्परिणामों पर मंथन करती रही है। भारतेंदु हरिश्चंद्र, निराला, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, धूमिल, लीलाधर जगूडी, चंद्रकांत देवताले, दुष्यंत कुमार, लीलाधर मंडलोई, मंगलेश डबराल, केदारनाथ सिंह, सर्वेश्वर दयाल सकलेना, ऋतुराज,आलोकधन्वा, राजेश जोशी, अशोक वाजपेयी, ज्ञानेंद्रपति, विजेंद्र, एकांत श्रीवास्तव, अग्निशेखर, अरुण कमल, रामदरश मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी आदि लगभग सौ से भी अधिक समकालीन कवियों ने अपनी व्यंग्यात्मकता से समकालीन कविता को और अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता को सशक्त किया है।

२१ वी सदी की समकालीन हिंदी कविता में व्यंग्य आत्मरुपी हो गया है। यह व्यंग्य हास्य उत्पन्न तो करता है, परंतु अपने उद्देश्य की पूर्णता के प्रति गंभीर है। जिससे हँसाने–वाला कवि और हँसनेवाला पाठक हँसते समय वह खुद पर हँस रहा होता है इस बात का पूरा अहसास २१ वी सदी की हिंदी कविता

में व्यंग्य करता है। संवेदनशीलता, यथार्थता, गंभीरता, बौद्धिकता, तटस्थता और सांकेतिकता आदि व्यंग्य के मूलभूत तत्वों का पूरा ध्यान समकालीन कवियों ने रखा है। २१ वीं सदी में समकालीन कवियो ने पुराने कविओं के प्रतिकों को परिवेश के अनुसार नये अर्थ प्रदान किये है ज्ञानेंद्रपति कुकुरमुत्ता को नये अर्थ में पेश करते हुए कहते है–

"अशिष्ट !/ देख ध्यान से अरे मैं विशिष्ट

मैं नहीं वह, खुले में, सड़े पुआल पर उगा कुकुरमुत्ता कि ले जाए वह भी जिसके पाव नहीं जुत्ता

अरे मैं तो वातानुकूलित कक्ष का वासी बारहमासी ग्रोलेतेग्यित नहीं, बुर्ज्वा/

सिर नवा/ मैं खादखोर मशरूम

क्या जाने मुझे, तू हाडतोड मजलूम/ गरीबी से गर्वित निबुध अपने चित्त को लिए चित्त !" [1]

ज्ञानेंद्रपति यहाँ पर उस समाज पर व्यंग्य करते है, जो शोषित वर्ग से विकसित होकर एअरकंडिशन में पहुँच गया वह भी आज खाद अर्थात किसी दूसरे का शोषण करके जी रहा है। निराला जी की कविता में सिर्फ गुलाब ही सामंती वर्ग का प्रतिक था किंतु २१ वी सदी में बाजारवादी दौर में शोषनकर्ताओं के विभिन्न रुप हमारे सम्मुख प्रस्तुत हो रहे है। एअरकंडिशन बक्से मे तैयार होनेवाले संवेदनाहीन मशरुम को ज्ञानेंद्रपति प्रस्तुत करते है, जो २१ वी सदी के परिवर्तन को रेखांकित करता है।

२१ वी सदी का कवि बेहतर दुनिया बनाने का सपना देख रहा है, क्यों कि इस उत्तर–आधुनिक परिवेश में विकास की परिभाषा गलत दिशा में जा रही है, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा मीडीया का परिवेश विकसित होने का अर्थ मोटापे की तरह है, जो विभिन्न बिमारीयों का घर बन चुका है। उसी प्रकार इंटरनेट, सोशल साईट्स, पोस्टर, संस्कृति, बाजारवादी रिश्ते आदि चमकदार है किंतु विभिन्न सामस्याओं के जन्मदाता है। आज भी भ्रष्टाचार, महंगाई, नारी उत्पीडन, दलित शोषण, पर्यावरण, प्रदूषण, आदिवासी अस्मिता, मुलभूत समस्याओं के साथ ही विभिन्न असांस्कृतिक हमलों से भारतीय समाज ग्रस्त है । इनके खिलाफ तीखी और प्रहारात्मक अभिव्यक्ती श्रेष्ठ व्यंग्य को जन्म देती है। भगवत रावत अपनी कविता में कहते है–

"जब राजा दिखाई देने लगे कुछ अधिक भावुक, आत्मीय, कलावंत/ और घर–घर में

होने लगे उसकी उदारता का प्रचार तब तो समझ ही जाना चाहिए कि कोई

जघन्य अपराध छिपाया जा रहा है।"[2]

इस प्रकार भगवत रावतजी राजनीति के दूषित वातावरण ने किस तरह सबको अपने गिरफ्त में लिया है तथा नेताओं के षड्यंत्र को तोडने का प्रयास किया है। मनोज जैन 'मधुर' अपनी काव्य पंक्तियों में कहते है

"आँखो में घडियाली आंसू /कोयल सी तानें बोली में

दिखें आचरण मर्यादा में/घातें ही घातें झोली में"[3]

वर्तमान प्रदर्शन की प्रवृत्तिओं का दुष्परिणाम 'मधुर' प्रस्तुत करते है। राजनेता घडियाली 'आँसू' रोता है, कोयल सा गाता है, आचरण शुद्ध दिखा रहा है किंतु 'घात' अर्थात उसके अभिनय में धोका है। मन में कपट है कवि नेताओं का बुरखा फाड रहे है। २१वी सदी में भारतीय प्रशासन व्यवस्था का एक नया चलन आया है कि, सबको पहचान पत्र भारतीयता का दिया जाएं। राशन कार्ड , आधार कार्ड, वोटिंग कार्ड आदि विभिन्न पहचान पत्रों के आधार पर मध्यम वर्ग, गरीब वर्ग को सताया जाता है। नयी सरकार, नया कार्ड इस प्रकार हर राजनैतिक झुंड अपना प्रभाव छोडने हेतु योजनाओं का निर्माण करता है किंतु उसमें पीसनेवाला मध्यम वर्ग होता है। अरुण कमल अपनी प्रसिध्द कविता 'सरकार और भारत के लोग'(२०१२) में कहते है—

"राशन की दुकानें पहले ही उठ गई थी, घासलेट पेट्रोल से भी मँहगा था

सरकारी नलों में पानी नहीं हवा भरी थी/हर दो मील पर रँगदार थे

कोई भी कहीं भी मारा जा सकता था ऐसी उदारता थी

परन्तु हर नागरिक को पहचान पत्र लेकर चलना अनिवार्य था।"[4]

इस प्रकार अरुण कमल समकालीन भारतीय नागरीकों के दयनिय हालातों का ब्यौरा देते है। डॉ. सुरेश माहेश्वरी इस व्यंग्यात्मकता के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहते है, "सामाजिक विसंगतियों पर चोट करते हुए, व्यंग्य न केवल मिथ्याचारों और भ्रष्टाचारों को चुनौति देता है, अपितु इनसे सताए हुए जनमानस को नैतिक बल तथा संतोष भी देता है। पीडित मानस को अहसास होता रहता है कि, कहि कोई है जो उसकी यातनाओं का सहयोगी है।"[5] इस प्रकार समकालीन कवि का व्यंग्य संप्रेषण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सुनीता जैन, अनामिका, निर्मला पुतुल कात्यायनी, रजो सेठ, कुसुम असल, स्नेहमयी चौधरी,

सुशिला टाकभौरे, रूचा शर्मा, सविता सिंह, रंजना जयस्वाल आदि महिला कवयित्रीओं में व्यंग्य की धार 21 वी सदी में तेज हुई है। रजना श्रीवास्तव अपने गंभीर, तीखे व्यंग्य द्वारा सामाजिक व्यवस्था पर चोट करती हुई कहती है –

"यह एक रेप केस का / लाइव टेली कास्ट है
यह खबर एक झुनझुना है / जिसे सब
अपने–अपने तरीके से बजा रहे है/मीडिया, पत्रकार, राजनीतिज्ञ" [6]

इस प्रकार यथार्थ परिवेश नारी के शरीरिक शोषण के साथ ही उसकी आत्मा पर भी चोट कर रहा है। राजधानी दिल्ली में बलात्कार होता है और मीडिया पत्रकार, सियासती लोग तड़का मारकर अपने आप को पेश करते है। आज समस्याओं का प्रदर्शन तथा सहानुभूति का ढोंग रचाया जा रहा है शोषित व्यक्ति वस्तु बन गये है जिनकी वेदनाओं के बाजार से को करोड़ों रुपयें का मुनाफा कमाने का माध्यम मीडिया हो गया है । इसलिए संवेदनाहीन समाज की निर्मिती हो रही है। इन बातों पर व्यंग्य की तीखी धार समकालीन कविता करती है। इस प्रकार सामाजिक अन्याय के विरुध्द, असांस्कृतिक घटनाओं के विरुध्द समय–समय पर स्त्री कवयित्रीओं ने अपनी व्यंग्यधर्मिता को सार्थकता दी है।

व्यंग्य काव्य की संप्रेषण शक्ति सारे जीवन के कोणों को स्पर्श करनेवाली होती है, उसका प्रमुख कारण उसकी भाषा होती है। समकालीन काव्य भी भाषा सपाट बयानी की तरह है किंतु वह अपना प्रभाव, अमिट छोड़ जाती है– मदन कश्यप अपनी सवालों की नज्म कविता में लिखते है –

कामगारों में / भय क्यूँ है
श्रम की कीमत / कम क्यूँ है
अत्याचारी / के आगे
झुका हुआ / परचम क्यूँ है।" [7]

इस प्रकार जनवादी स्वर को अपनी सशक्त भाषा में संप्रेषण शक्तियुक्त बनाया है, जो समकालीन कविता की विशेषता है। २१ वी सदी का व्यंग्य काव्य विशेष रूप से अपने परिवर्तित परिवेश के साथ ही परिवर्तित शिल्प के साथ प्रस्तुत हुआ है, राजेश जोशी जो 'ग्लोबल विलेज' की संकल्पना की त्रासदी को व्यक्त करते हुए कहते है –

२१ वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में व्यंग्य (प्रथम दशक)

"नदियों से बात करना चाहता हूँ इस समय / पर टेलीफोन पर यह मुमकिन नहीं
उन दरख्तों का भी मेरे पास कोई नम्बर नहीं / जो अक्सर रास्तों में मिल जाते है
परिन्दों के पास कोई मोबाइल होगा / इसकी कोई उम्मीद नहीं" [8]

समकालीन कविता में इतिवृत्तात्मकता के साथ ही सपाट बयानी को महत्व वर्तमान में प्राप्त हो रहा है, जो व्यंग्य धर्मिता के प्रभावात्मकता पर परिणाम कर सकती है। समकालीन कविता में कहा पर बोलचाल का इस भी होता है, जिसके कारण संप्रेषणीयता कम हो सकती है। कुमार अंबुज की काव्य भाषा सरल है किंतु वह अपने व्यंग्य को सफलता से प्रस्तुत करते है –

"अस्पताल से या दुकान से / लौटते हुए आदमी को लगता था।
कि उसे लूट लिया गया है सरे बाजार कि अब वह क्या कर सकता है।" [9]

इस प्रकार सबसे बड़ा व्यंग्य यहां पर मनुष्य की लाचारी पर किया गया है। बाजार हो या अस्पताल सरे आम लूट मची है किंतु सामान्य मनुष्य बेबस है कितना भयावह यथार्थ है कुमार अंबुज की यह विशेषता है कि वे काव्य को क्लिष्ट नहीं बनाते वह जन भाषा का प्रयोग करते है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि, समकालीन कविता में 'व्यंग्य' गंभीर और विद्रोह की प्रवृत्ति को लेकर विकसित हुआ है। 21 वी सदी में व्यंग्य की संप्रेषण शक्ति को बचाये रखने के लिए भाषा या शिल्प विस्तार से कवियों को बचना आवश्यक है। किंतु समकालीन कविता में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, पर्यावरण विमर्श, आदिवासी विमर्श, वृद्ध विमर्श आदि विचार प्रवृत्तिओं को तेज धार प्राप्त हुई है। २१ वी सदी के व्यंग्य काव्य में व्यंजना शब्द शक्ति से अधिक मात्रा में अभिधात्मक और लक्षणात्मक भाषा प्रवृत्ति को पसंद किया गया है। व्यंग्यधर्मिता के कारण समकालीन कविता की संवेदनशीलता, संप्रेषणीयता और कथ्यपूर्णता को दृढ़ता प्राप्त हुई है। 21 वी सदी की समकालीन कविता का व्यंग्य अपने मजाकिए ढंग से बाहर निकलकर गंभीर तथा दायित्वबोध की भावना को जाग्रत करनेवाला है। 21 वी सदी की कविता में व्यंग्य का परिवेश विस्तृत किया है। राजनीति, भ्रष्टाचार इन दो विषयो को छोड़कर उपेक्षित विषयों को केंद्र में रखकर व्यंग्यकार अपना कार्य कर रहे है। जिसके परिणाम स्वरुप समाज के लिए टॉनिक का कार्य कर रहा है, जिससे सामाजिक बिमारियों से मुक्त मानव हो रहा है ।